International Journal of Arts & Education Research

परिषदीय प्राथमिक एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के नामांकन स्तर का तुलनात्मक सर्वेक्षण

कौशल कुमार शर्मा*[1], डा•एस•पी•सिंह[2]

[1]प्रवक्ताद्ध, वाई एस एल कॉलिज ऑफ एजुकेशन,मेरठ।

[2]प्राचार्य, मेरठ कॉलिज ऑफ एडवांस टैक्नॉलोजी मेरठ।

सार संक्षेप

प्रस्तुत लेख में प्राथमिक परिषदीय विद्यालयों में गिरते नामांकन स्तर के कारणों को जानने का प्रयास किया गया है। स्कूली शिक्षा में नामांकन, ठहराव, सार्वभौमीकरण, सर्वशिक्षा अभियान, अनिवार्य शिक्षा अधिनियम आदि अनेक प्रयासों के बाद भी नामांकन स्तर में अपेक्षित सुधार न होने के कौन-कौन से कारण है? कौन कौन से घटक इसे प्रभावित करते हैं? और क्यों? क्या इनमें सुधार सम्भव है, यदि हाँ तो किस प्रकार? इन सभी प्रश्नों के उत्तर खोज निकालने एवं कुछ उपयोगी सुझाव इस लेख में प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

किसी भी देश में समृद्धि और शक्ति का सशक्त आधार एवं राष्ट्रीय विकास का मापदण्ड है शिक्षा।

रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था- ''शिक्षा ईट और चूने से बने मकान की भाँति नहीं है, जिसका नक्शा मिस्त्री पहले से ही तैयार कर सकता है। शिक्षा तो वृक्ष की भाँति है, जो अपने जीवन की लय के साथ ताल मिलाकर और उसके अनुरूप विकसित होती है।''

गांधी जी कहते हैं कि **''सच्ची शिक्षा केवल हाथ, पैर, नेत्र कान, नाक आदि शारीरिक अंगों के उचित व्यायाम व प्रशिक्षण से ही प्राप्त की जा सकती है।''** हमारे देश की जनशिक्षा को अनिवार्य नहीं बल्कि स्वैच्छिक कहा जा सकता है ऐसी शिक्षा दीर्घ काल से चली आई है सभी को शिक्षा मिले इस बात पर हम लगातार जोर देते आ रहे हैं इसके लिए अनेक कदम भी उठाए गये हैं और अब शिक्षा प्राप्त करना बच्चों का मौलिक अधिकार बन गया है। शिक्षा के सार्वभौमिक लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु पंचवर्षीय योजनाओं में, शिक्षा नीतियों में समय-समय पर परिमार्जन किये गये हैं आवश्यकतानुरूप शिक्षण संसाधनों का विकास आर्थिक सहायता की व्यवस्था की जाती रही है। परन्तु प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के नामांकन स्तर में लगातार गिरावट आ रही है जबकि निजी विद्यालयों के नामांकन स्तर में लगातार वृद्धि हो रही है। ऐसा क्यों? क्या हमारी शिक्षा नीति दोषपूर्ण है? अथवा समाज का कैसा दृष्टिकोण है? सामाजिक आवश्यकताएँ कौन-कौन सी हैं? वे कौन से कारण है जिनके फलस्वरूप हमारी शिक्षा प्रणाली में दोष उत्पन्न हो गये हैं। उनके सुधार हेतु हम किन-किन बिन्दुओं का अध्ययन कर सकते हैं। यह अध्ययन प्राथमिक विद्यालयों में गिरते स्तर' के कारणों को पहचानने एवं उनके निवारण हेतु कुछ सुझाव विकसित करने का एक प्रयास है।

यूं कहें तो जीवन के प्रत्येक पग पर समस्याएं उत्पन्न होती हैं और व्यक्ति उन समस्याओं का समाधान करता हुआ प्रगति की और अग्रसर होता है ऐसा कहा गया है कि ''आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।'' जब भी किस वस्तु, तथ्य अथवा विचार की आवश्यकता अनुभव की गयी है तब ही उस क्षेत्र में आविष्कारों का प्रतिपादन हुआ है।

वर्तमान समय में सरकार द्वारा संसाधनों को जुटाने के भरसक प्रयास किये जा रहे हैं परन्तु वास्तव में उन लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो पा रही है जिनकी अपेक्षा की जाती हैं अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति और बाधक तत्वों का वर्णन अधोलिखित है यथा-

सामाजिक दृष्टिकोण-बदलते सामाजिक परिवेश में प्रत्येक अभिभावक की यह अपेक्षा होती है कि उसका बालक इस प्रकार की शिक्षा ग्रहण करे कि वह भावी जीवन में अपने आप को व्यवस्थित कर सके। हमारे प्राथमिक विद्यालय जिनके पाठ्यक्रम एवं प्रवेश व्यवस्था में काफी दोष है और जो प्रशासनिक नियम बनाएं गये हैं वे अधिक जटिल है जिनमें सरलता से परिवर्तन सम्भव नहीं है, परन्तु निजी विद्यालयों में आवश्यकतानुसार त्वरित परिवर्तन सम्भव है। परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के प्रति अभिभावकों की धारणा नकारात्मक है अर्थात् उनका यह मानना है कि प्राथमिक विद्यालय समाज की अपेक्षाओं को पूर्ण नहीं कर पा रहे हैं जबकि इसके विपरीत निजी विद्यालयों का संगठन एवं प्रशासन अभिभावकों की अपेक्षाओं को पूर्ण करने में सक्षम दिखाई पड़ता है इसी कारण अभिभावकों का रूझान निजी विद्यालयों की ओर बढ़ रहा है और प्राथमिक परिषदीय विद्यालयों में नामांकन घट रहा है।

आर्थिक स्थिति-अभिभावकों की आर्थिक स्थिति का सीधा प्रभाव बालकों के सामाजिक शारीरिक एवं मानसिक स्थिति पर पड़ता है यह भी आर्थिक स्थिति का विद्यार्थी के भावात्मक एवं संवेगात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। यदि परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों की बात करें तो आर्थिक रूप से पिछड़े विद्यार्थी ही प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन कराते है। जिन अभिभावकों की स्थिति जैसी ही होती है वे उसी के अनुरूप अपने बालकों का नामांकन उसी स्तर के निजी विद्यालयों में कराते हैं। परिषदीय विद्यालयों में सभी सुविधाएं जैसे निःशुल्क शिक्षा, गणवेश, अल्पाहार अथवा पोषाहार, छात्रवृत्ति आदि अन्य सुविधाओं के प्रति अभिभावकों का ध्यान आऔष्ट नहीं हो रहा है। जबकि निजी विद्यालयों में साधन एवं सुविधाएं अपेक्षाऔत अधिक होने के कारण नामांकन स्तर में दिन प्रतिदिन वृद्धि का होना इस बात का द्योतक है कि अभिभावकों की मांग, समय के अनुरूप शिक्षा दिलाने की ओर पथगमन कर रही है।

पाठ्यक्रम एवं निर्धारित तत्व-पाठ्यक्रम एक ऐसा तत्व है जोकि गिरते नामांकन स्तर में एक अहम भूमिका अदाकर रहा है जैसा कि दृष्टिगोचर होता है कि पाठ्यक्रम का निर्धारण विभिन्न परिषदों के माध्यम से किया जा रहा है प्रत्येक परिषद अपना पाठ्यक्रम निर्धारित करती है जैसा कि उसकी आवश्यकता है। अंग्रेजी भाषा की उपयोगिता व प्रभुत्व को देखते हुए स्कूली शिक्षा में इसका पढना अनिवार्य कर दिया है निजी विद्यालयों में यह भाषा पूर्व नर्सरी से आरम्भ की गयी है परन्तु परिषदीय विद्यालयें में इसका आरम्भ कक्षा एक से किया गया है। जबकि कुछ निजी विद्यालयों में तो अंग्रेजी भाषा को माध्यम भी बनाया गया है। शिक्षण की दृष्टि से यदि बात करें तो मातृभाषा के माध्यम से ही प्रभावशाली अन्तः क्रिया सम्भव है। क्योंकि भारत में अनेक भाषाओं के चलते, बालक अपनी मातृभाषा में ही विचारों का आदान प्रदान कर पाते हैं। साथ ही साथ अपने क्षेत्र में चलने वाली एक दो अन्य भाषाओं से ही परिचित हो जाते हैं। यह स्थिति लगभग सभी जगह देखी जा सकती है जब भाषाओं का समन्वय होता है तब बच्चों के मानसिक तथा बौद्धिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए भाषाओं का समन्वय करते हुए शिक्षण प्रभावशाली बनाया जा सकता है इसलिए मातृभाषा को न केवल माध्यम बल्कि पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग होना चाहिए। परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में जहाँ अंग्रेजी भाषा को कक्षा एक से आरम्भ किया गया है वही दूसरी ओर निजी विद्यालयों में पाठ्यक्रम का निर्धारण पूर्व नर्सरी, नर्सरी, एलञ्केञ्जीञ एवं यूञ्केञ्जीञ पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात् ही कक्षा एक में प्रवेश प्राप्त होता है। वास्तव में चार वर्ष का पाठ्यक्रम कक्षा एक से पूर्व ही पूर्ण कराया जाता है। जिससे बालक में परिपक्वता बढ़ती है और वह कक्षा एक के पाठ्यक्रम को पूर्ण करने में सक्षम हो सकता है। इसके अतिरिक्त निजी विद्यालय शिक्षण अधिगम को प्रभावी बनाने हेतु अन्य सहायक संसाधनों का उपयोग सरलता से कर सकते हैं।

विद्यालय परिवेश-एक ओर जहाँ परिषदीय विद्यालयों में सम्पूर्ण संसाधन एवं सुविधाएँ विद्यार्थियों कों प्रदान कराने का प्रयास किया जा रहा है फिर भी विद्यालयों का परिवेश निजी विद्यालयों के परिवेश से भिन्न पाया जता है। क्योंकि दूसरी ओर निजी विद्यालयों में समाज की मांग के अनुरूप ही संसाधन जुटाएं जाते हैं और कक्षा शिक्षण को अपेक्षाऔत अधिक प्रभावशाली

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

बनाया जाता है। तथा शैक्षिक गुणवत्ता एवं विद्यालयी परिवेश में भिन्नता पाई जाती है। मध्य प्रदेश शासन की नई पहल में आसपास के परिवेश से शिक्षण में 'पंच-प' अर्थात परिवार, परिवेश, परम्परा, पराक्रम और पहचान के आधार पर स्कूली शिक्षा के महत्व को सहर्ष स्वीकारना चाहिए। परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में जहाँ शिक्षक मात्र औपचारिकता पूर्ण करते हुए वेतन भोग करते हैं तथा शिक्षण कार्य में कर्तव्यनिष्ठता नहीं निभाते हैं वहीं निजी विद्यालयों में शिक्षण कम वेतन पर भी कर्तव्यनिष्ठता से कार्य करते हुए शिक्षा की ज्योति को प्रज्वलित कर रहे हैं। इस व्यवस्था में परिमार्जन हेतु सर्वेक्षणों के निष्कर्ष के रूप में शिक्षा प्रणाली में विभिन्न परिवर्तन किये गये परन्तु जो सुझाव समितियों द्वारा दिये गये उनके सार्थक परिणाम प्राप्त नहीं हुए, यदि वास्तव में देश के सारे बच्चों को अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देनी है तो सरकार को ऐसे कानून और नीतियाँ बनानी चाहिए जिससे कि देश में समान राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली लागू हो और विद्यालयों की विविधता समाप्त हो जाये और सबकों शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हो सकें। जब तक देश में समान शिक्षा प्रणाली लागू नहीं होगी तब तक शिक्षा का अधिकार बेमानी है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था सरकार की दोहरी एवं अस्पष्ट नीतियों का परिणाम है। गांधी जी की बुनियादी शिक्षा में साहसी नागरिकता के लिए बच्चों को तैयार करने का विधान था उन्होंने हरिजन में कहा है कि-''मनुष्य न केवल बुद्धि है न निपट पाश्विक शरीर और न केवल हृदय और आत्मा समग्र मानव इन तीनों के उचित और सामंजस्य पूर्ण योग से ही बनता है और शिक्षा की सच्ची योजना में इसी का समावेश होना चाहिए''। देखा गया है कि विभिन्न प्रवेश परीक्षाओं में ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले बच्चों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों के बच्चों को अधिक सफलता मिलती है कारण स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्रों में बच्चों को सुविधाएं ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक मिलती है। साथ ही प्रतिस्पधाओं में पर्याप्त जागरूकता भी अधिक होती है जबकि ग्रामीण क्षेत्र मे विद्यार्थियों को सुविधाओं का अभाव रहता है साथ ही शैक्षिक वातावरण असुविधाओं में घिर जाता है। इसी प्रकार परिषदों की भिन्नता का परिणाम भी बालकों को भुगतना पड़ता है। बोर्ड की विभिन्नता से पाठ्यवस्तु एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं में अन्तर देखने को मिलता है। जिसके माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न कौशलों में दक्षता प्राप्त करता है और जीवन में सामंजस्य स्थापित करता हुआ अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल हो जाता है। इसके विपरीत ऐसा वातावरण जो विद्यार्थियों में नकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करें बालकों के लिए हितकर नहीं हो सकता। इसलिए यदि शिक्षा के सार्वभौमीकरण के प्रत्यय' को प्राप्त करना है और 'बच्चों का निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम' को प्राप्त करना है तो हमारी सरकार को 'समान राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू कर उसका कडाई से पालन करने के संदर्भ में दिशानिर्देश भी लागू करने होंगे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना होगा और इनके मध्य पैदा हुई खाई को पाटना होगा तब ही सर्वशिक्षा एवं सार्वभौमीकरण के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों और निजी विद्यालयों के विद्यालय परिवेश संसाधनों पाठ्यक्रम एवं कार्यशैली का अन्तर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में बाधा उत्पन्न कर रहा है जिसके परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों की गुणवत्ता में अन्तर दिखाई पड़ता है इस अन्तर को समाप्त करके शिक्षा के समान अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

प्रस्तुत अध्यन में परिषदीय एवं निजी विद्यालयों के नामांकन स्तर में अन्तर को ज्ञात करने के लिए सामाजिक दृष्टिकोण, आर्थिक स्थिति, पाठ्यक्रम सम्बन्धी तत्व, विद्यालय परिवेश, विद्यालय प्रशासन, शिक्षक अभिभावक संध, अध्यापकों की कार्यशैली आदि ऐसे कारक हैं जो कि परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में गिरते नामांकन स्तर के लिए जिम्मेदार हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- 2005 शिक्षा का उद्देश्य और आज की व्यवस्था, भारतीय आधुनिक शिक्षा नई दिल्ली अंक-4।
- गौड आरञ्एसञ् 2001 महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन परिप्रेक्ष्य न्यूपा, अप्रैल अगस्त 2001 अंक 1-2

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

- कुमार गीता, 2005, टीचिंग इंग्लिश-टीचर प्रस्पेक्टिव, मैसर्स एनञएफञ्जीञ-इंग्लिश
- औष्णमूर्ति जेञ 1992, एजुकेशन एण्ड सिगनीफिकैंस ऑफ लाइफ, चेन्नई औष्णमूर्ति फाउन्डेशन
- एनञ्सीञ्ईञआरञ्टीञ 2006 ने नेशनल कैरीकुलम फ्रेमवर्क 2005, पोजिशन पेपर नेशनल फोकस ग्रुप ऑफ एजुकेशन फॉर पीस, नई दिल्ली
- औष्ण लाल 1953, वेद परिचय दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली
- फाउन्टेन, एस, 1999 एजुकेशन फॉर पीस इन यूनीसेफ न्यूयार्क
- अमृतावली, आर, 1999, लैंग्वेज इज ए डाइनामिक टेक्स्ट-एसेज आन लैंग्वेज, अक्षरा सीरीज हैदराबाद, एलाइड पब्लिशर्स, कैम्ब्रिज
- क्रिस्टल डेविड 2004, द लैंग्वेज रिवोल्यूशन, केबिज : मालडन एमञएञ-पॉलिटी प्रेस
- सक्सेना आरञ्पीञ 2005, लैंग्वेज एण्ड कल्चर, मैसर्स एनञएफञ्जीञ इंग्लिश
- स्मित नॉरबर्ट, 2000 वॉक्युबलरी इन लैग्वेज टीचिंग कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस
- सुनवाणी, विजय कुमार 2005, इंग्लिश लैंग्वेज एण्ड इण्डियन कल्चर, मैसर्स एनञएफञ्जीञ, इंग्लिश
- टिक्लू एमञएलञ 2004 ईञ एलञ टीञ इन इण्डिया नयी दिल्ली, आरिएंट लंगमेन
- यशपाल, ज्ञान को मुक्त कीजिए : साक्षात्कार अमर उजाला 25 मार्च 2009
- शिवपुरी जीञ 2006 जे औष्णमूर्ति आन एजुकेशन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका
- गुप्ता, विशैष 2008, शिक्षा व्यवस्था का आइना दैनिक जागरण 16 फरवरी 2008
- 1979, शिक्षा एवं जीवन का महत्व, वाराणसी, औष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया
- बर्क, लारा ईञ 2006 चाइल्ड डेवलैपमैन्ट, एलन एण्ड बेकन पब्लिशर्स

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.